# शब्द विचार

## सार्थक एवं निरर्थक शब्द

**शब्द विचार**

व्याकरण के जिस भाग में आप शब्द संरचना एवं शब्दों के प्रयोग के विषय में जानेंगें, उस भाग को शब्द विचार कहते हैं।

अब आपके मन में प्रश्न उठेगा कि ये शब्द क्या हैं?

वर्णों (स्वरों तथा व्यञ्जनों) के उस सार्थक मेल को शब्द कहेगें जिससे कोई अर्थ प्रकट होता हो।

**जैसे:** बालक: शब्द से बालक/बच्चे का बोध होता है।

**शब्द भेद**

**सार्थक तथा निरर्थक शब्द**

आप शब्दों को सार्थक तथा निरर्थक में वर्गीकृत कर सकते हैं।

**सार्थक शब्द**

वर्णों का ऐसा संयोग जिसका कोई अर्थ हो, सार्थक शब्द कहलाता है।

**यथा** – भोजनम्, विद्यालय: आदि।

'भोजनम्' का नाम लेते ही आप मन में रोटी तथा खाद्य वस्तुओं की कल्पना करेगें।

'विद्यालय' शब्द को देखते ही आपको अपने बैग, ड्रेस, तथा, अध्यापकों की याद आएगी।

आप देख सकते हैं कि उपरोक्त दोनों शब्दों में अपना विशिष्ट अर्थ छिपा है।

**निरर्थक शब्द**

निरर्थक शब्दों में वर्णों का संयोग तो होता है, परन्तु इनका कोई अर्थ नहीं होता।

**जैसे:** भोजनम्–ओजनम्

यहाँ 'ओजनम्' शब्द का कोई अर्थ नहीं है।

यदि हम 'विद्यालय' के वर्णों का क्रम उलट दें तो कोई अर्थ नहीं बनेगा।

य् + ल् + द्या + वि = यलद्यावि

## शब्दभेद - प्रयोग के आधार पर

### विकारी शब्द

'विकार' का अर्थ होता है परिवर्तन। अर्थात, वे शब्द जो लिङ्ग एवं वचन के साथ परिवर्तित हो जाएँ, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।

**जैसे:**

| | |
|---|---|
| बालक: हसति। | बालक हंसता है। |
| बालकौ हसति:। | दो बालक हंसते हैं। |
| बालका: हसन्ति। | बहुत से बालक हंसते हैं। |

यहाँ आप देख सकते हैं कि 'बालक' के 'वचन संख्या' के अनुसार इस शब्द का रुप 'बालक, बालकौ तथा बालका:' में बदल गया। इस कारण ही इन शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं।

## शब्द भेद - रचना के आधार पर

शब्द संरचना के आधार पर हम शब्दों के अनेकों भेद कर सकते हैं। जैसे - लिङ्ग के आधार पर, वचन के आधार पर, विभक्ति के आधार पर तथा अकारान्त शब्द, आकारान्त शब्द एवं इकारान्त शब्द के आधार पर।

### अकारान्त शब्द

उन शब्दों को अकारान्त कहते हैं जिनके अंत में वर्ण 'अ' आता है। जैसे - बालक:, राम:, श्याम:

बालक - ब + आ + ल + अ + क् + **अ**

राम: - र् + आ + म् + **<u>अ</u>**

आप देख सकते हैं कि इन शब्दों में अन्तिम वर्ण **'अ'** है।

**आकारान्त शब्द**

वे शब्द जिनके अंत में 'आ' हो, आकारान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे - छाता, राजा आदि।

आप देख सकते हैं कि इन दोनों शब्दों में अन्तिम वर्ण 'आ' है।

**इकारान्त शब्द**

वे शब्द जिनके अंत में 'इ' हो, इकारान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे - मुनि, नीति आदि।

**उकारान्त: शब्द**

वे शब्द जिनके अंत में 'उ' हो, उकारान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे - साधु, शिशु, मधु आदि।

ये शब्द रुप संस्कृत व्याकरण का आधार कहे जाते हैं। आप जितना ज्यादा इन्हें समझने का प्रयास करेगें, उतनी ही अच्छी आपकी संस्कृत होगी।

अब आपके मन में प्रश्न उठेगा कि आखिर शब्द रुप को किस प्रकार समझें। शब्द रुप तीन वचनों, सात विभक्तियों तथा संबोधनों में बँटे होते हैं।

| **विभक्ति** | **कारक** | **चिह्न अर्थ** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता | न<br>(ने) | बाल:<br>(बालक ने) | बालौ<br>(दो बालकों ने) | बाला:<br>(सब बालकों ने) |
| द्वितीय | कर्म | (को) | बालम्<br>(बालक को) | बालौ<br>(दो बालकों को) | बालान्<br>(सब बालकों को) |
| तृतीया | करण | (से) | बालेन<br>(बालक से) | बालाभ्याम्<br>(दो बालकों से) | बालै:<br>(सब बालकों से) |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुर्थी | सम्प्रदान | के लिए (को) | बालाय (बालक के लिए) | बालाभ्याम् (दो बालकों के लिए) | बालेभ्य (सब बालकों के लिए) |
| पंचमी | अपादान | से (अलग होने के अर्थ में) | बालात् (बालक से) | बालाभ्याम् (दो बालकों से) | बालेभ्य (सब बालकों से) |
| षष्ठी | संबंध | (का, के की) | बालस्य (बालक का) | बालयो: (दो बालकों का) | बालानाम् (सब बालकों का) |
| सप्तमी | अधिकरण | (में, पर) | बाले (बालक में) | बालयो: (दो बालकों में) | बालेषु (सब बालकों में) |
| सम्बोधन | | (हे! अरे) | हे बाल! (हे बालक!) | हे बालौ! (हे दो बालकों!) | हे बाला:! (हे सब बालकों!) |

## शब्द रुप

शब्द रुप को जानने के लिए लिङ्ग वचन तथा कारक को जानना ज़रुरी है।

**1.** लिङ्ग

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं:

**(क) पुँल्लिङ्ग**

**(ख) स्त्रीलिङ्ग**

**(ग) नपुंसकलिङ्ग**

पुँल्लिङ्ग**:** वे शब्द जिनसे पुरुष जाति का बोध हो, पुँल्लिङ्ग कहलाते हैं।

**जैसे:** छात्र:, नृप:, मयूर:, गज:, शुक:, काक: आदि।

इन सभी शब्दों से आपको पुरुष जाति का पता लगेगा।

स्त्रीलिङ्ग: वे शब्द जिनसे स्त्री जाति का बोध हो, स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

**जैसे:** बालिका, लता, रमा, मूषिका आदि शब्दों से आप स्त्रीलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग में भेद कर सकते हैं।

नपुंसकलिङ्ग: पुँल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग से संबन्धित वस्तुओं के अतिरिक्त ऐसी वस्तुएँ जिनका लिङ्ग स्पष्ट न हो, नपुंसकलिङ्ग कहलाते हैं।

**जैसे:** पुस्तकम्, फलम्, जलम्, वनम् आदि।

**2. वचन**

वे शब्द जिनसे किसी वस्तु या व्यक्ति की संख्या का पता चले, वचन कहलाते हैं।

संस्कृत भाषा में तीन वचन पाए जाते हैं:

**(क) एकवचन**

**(ख)द्विवचन**

**(ग) बहुवचन**

**एकवचन:** जिन शब्दों से किसी एक वस्तु का पता लगे, एकवचन कहलाते हैं।

**जैसे:** बालक: गच्छति।

एक बालक जाता है।

**द्विवचन**: जिन शब्दों से दो वस्तुओं या व्यक्तियों का पता लगे, द्विवचन कहलाते हैं।
**जैसे:** बालकौ गच्छत:।

दो बालक जाते हैं।

**बहुवचन:** उन शब्दों को आप बहुवचन कहेंगे जिनसे तीन या अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का पता लगता हो।

**जैसे:** बालका: गच्छन्ति।

तीन बालक जाते हैं।

### 3. कारक

वे शब्द जो वाक्य में क्रिया के साथ प्रत्यक्ष संबंध दर्शाते हैं, कारक कहलाते हैं। जिन प्रत्ययों से कारकों का अर्थ प्रकट होता है, विभक्ति कहलाते हैं।

हिन्दी भाषा में जिस प्रकार से कर्त्ता का क्रिया के साथ संबंध बताने के लिए इन कारकों का प्रयोग किया जाता है, वैसे ही संस्कृत भाषा में विभक्तियों का प्रयोग होता है।

संस्कृत भाषा में संबंध को कारक नहीं माना गया है क्योंकि संबंध का क्रिया से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है।

**जैसे:**

राज्ञपुरुष: गच्छति।

अर्थात, राजा का पुरुष जाता है।

यहाँ राजा का गच्छति क्रिया से संबंध नहीं है। अत: इसे कारक की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

दिए गए उदाहरण की सहायता से आप कारक तथा विभक्ति को समझने का प्रयास करें।

**हे छात्रा:![(11)] दशरथस्य[(10)]सुत:[(1)] राम:[(2)] दण्डकारण्यात्[(8)]लङ्का[(3)]गत्वा युद्धे[(9)]रावण[(4)]बाणेन[(6)]हत्वा विभीषणाय[(7)]लङ्काराज्यम्[(5)]अयच्छत्[(12)]।**

नीचे दी गई तालिका के आधार पर हम इस वाक्य को कारक के अनुसार लगाएंगे।

| क्रम संख्या | शब्द:/पदानि | कारकम् | विभक्ति |
|---|---|---|---|
| 1, 2 | सुत:, राम: | कर्त्ता (ने) | प्रथमा |
| 3, 4, 5 | लङ्का, रावणं, लङ्काराज्यम् | कर्म (को) | द्वितीया |
| 6 | बाणेन | करणम् (से, के द्वारा) | तृतीया |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 7 | विभीषणाय | सम्प्रदान (के लिए) | चतुर्थी |
| 8 | दण्डकारण्यात् | अपादान (से पृथक होने के लिए) | पञ्चमी |
| 9 | युद्धे | अधिकरण (में, पे, पर) | सप्तमी |

इनकी सहायता से आप प्रत्येक विभक्ति पर कम से कम दो-दो वाक्य अवश्य बनाएँ।